Name of the Candidate: **Pankaj Sharma**

Name of the Supervisor: **Prof. Neeraj Kumar**

Department: **Hindi (Faculty of Humanities and Languages)**

Title: **Hindi Kahanee ke Sandarbh Mein Pathakiya Pratikriyon Ka Vishleshan (San 2000-2010 Tak)**

Abstract

वर्तमान दौर में कहानीकारों के लिए आलोचक से ज्यादा पाठक विश्वसनीय बन गया है। आज का पाठक कहानी में अपनी भागीदारी निभाता है। एक तरह से वह रचनात्मक साझेदार की भूमिका में उपस्थित हुआ है। कहानी का पाठक कहानी पढ़ते समय छोटे-छोटे वक्तव्यों, चित्राण, भाषाई परिवर्तन, शैली, शिल्प और प्रविधि में पैनी नजर रखता है और पूरी गंभीरता व जिम्मेदारी से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। जरूरत पड़ने पर कहानीकार और सम्पादक को खरी खोटी भी सुना देता है और अपने संतुलित, तार्किक और सारगर्भित विश्लेषण से अपने महत्व को रेखांकित करता है।

पाठकीय प्रतिक्रियाएं एक त्वरित प्रकार्य है लेकिन पाठकीय प्रतिक्रिया की प्रतिक्रिया एक सोची समझी, सचेत अभिव्यक्ति है। एक तरह से पहली प्रतिक्रिया भावनात्मक होती है, वहीं दूसरे स्तर की प्रतिक्रिया विचारात्मक हो जाती है। कुछ पाठकीय प्रतिक्रियाओं की प्रतिक्रिया आरोप-प्रत्यारोप वाले होते हैं। उन प्रतिक्रियाओं को दरकिनार कर पाठकीय प्रतिक्रियाओं की प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करें तो वे कई स्तरों पर विशिष्ट और सार्थक दिखाई पड़ती हैं। पाठक की प्रतिक्रिया की प्रतिक्रिया कई अवसरों पर विमर्श का रूप धरण कर लेती है।

यह बात सर्वमान्य है कि किसी एक कृति में भिन्न-भिन्न अर्थ की संभावनाएँ छिपी रहती हैं। हर पाठक का बौध्दिक स्तर अलग-अलग होने के कारण अर्थ ग्रहण की क्षमता भी भिन्न-भिन्न हो जाती है। साहित्यिक बोध् का स्तर पाठकों की रुचि, संवेदनशीलता और भाषा क्षमता पर निर्भर करता है। रचना को समझने के लिए रचना के स्तर के करीब पहुँचना पड़ता है। इसलिए यह माना जाता है कि किसी भी भाषा के पाठक को यदि रचना का रस ग्रहण करना है तो जिस परिवेश में रचना लिखी गई है उस परिवेश को भी समझना होता है। भाषा, संस्कृति, परम्परा, रीति-रिवाज को जो पाठक जितना संवेदनशीलता से समझता है उतना ही अधिक रचना का रसास्वाद कर पाता है।

पत्रिका के लिए पाठकीय प्रतिक्रिया केवल मूल्यांकन ही नहीं बल्कि दिशा-निर्देशक की भूमिका भी निभाती है। पत्रिका में प्रकाशित कहानी, कविता, लेख अथवा किसी अन्य विध में प्रकाशित सामग्री पर पाठक अपनी राय देता है। अपनी राय देने से पूर्व वह किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होता है। पाठक लेखक की

साहित्यिकत पर अपनी प्रतिक्रिया देकर आलोचक की भूमिका में उपस्थित हो जाता है। कई बार पाठकों की प्रतिक्रियाएँ लेखकों और आलोचकों को भी सोचने पर बाध्य कर देती है। वहीं सम्पादक के विवेक कौशल की परीक्षा भी पाठक बखूबी लेता है। पाठकीय प्रतिक्रियाएँ अधिक व्याप्ति वाली लेकिन बिखरी-बिखरी विध है। असल में ये प्रतिक्रियाएं किसी पांडित्य की मोहताज नहीं होतीं, बल्कि नैसर्गिक होती हैं और अमूमन वहीं से निसृत होती हैं जहा रचना को पहुँचना होता है।

पाठक की प्रतिक्रियाओं में एकरुपता न होने के बावजूद भी वह पत्रिका और सम्पादक के लिए भी महत्वपूर्ण होती है। पाठक की प्रतिक्रियाओं से सम्पादक को यह अंदाजा लग जाता है कि वर्तमान समय के पाठकों की रुचि क्या है और वह कैसी रचनाएं पढ़ना चाहता है। पाठक की प्रतिक्रियाओं के माध्यम से सम्पादक भविष्य की योजनाएं भी बनाता है। पठनीय और अच्छी सामग्रियों के लिए पाठक पत्रिका और सम्पादक की प्रशंसा करता है, साथ में उनकी कमियों की ओर भी इशारा कर देता है। पत्रिका की निष्ठा और तेवर के प्रति जागरुक पाठक अपनी बात सम्पादक तक प्रतिक्रिया के माध्यम से संप्रेषित करता है।

कहानी के संदर्भ में पाठक की संवेदनशीलता एक अनिवार्य रचनात्मक संदर्भ है। उसकी संवेदनशीलता इतनी सजग और सक्रिय होती है कि वह रचना की वास्तविकता और अवास्तविकता का आकलन अपनी संवेदनात्मक क्षमता से बना लेता है। कहानी का पाठक अपनी प्रतिक्रियाएं संवेदना के स्तर पर ही प्रेषित करता है और उसी के माध्यम से कहानी के मर्म तक पहुंच जाता है। पाठक रचनाकार की संवेदना से संवेदित होता है और उससे जुड़ जाता है। कहानी की भाषा कहानी का अत्यधिक महत्वपूर्ण पक्ष है।

पाठक कहानी की भाषा के विषय में गंभीर होता है और कहानी की भाषा संरचना की विशिष्टता को अपनी प्रतिक्रिया के माध्यम से रेखांकित करता है। कई अवसरों पर यह भी देखा गया है कि किसी एक कहानी की भाषा एक पाठक को रोमांचित और उद्वेलित कर देती है और उसी कहानी को दूसरा पाठक भाषा के आधर पर ही खारिज कर देता है। पाठक भाषा के सौंदर्य को भी भलीभांति समझता है। वह कहानी की भाषा की बुनावट के आधर पर कहानी का मूल्यांकन करता है पाठक की विलक्षण संवेदनशीलता और भाषायी संपन्नता चकित करती है। भाषा के संदर्भ में भी पाठक भाषायी संरचना को बखूबी समझता है। वह भाषा के आधर पर कहानी को जांचता परखता है और अपनी भाषात्मक क्षमता के आधर पर कहानी पर प्रतिक्रिया देता है। पाठक केवल अपनी भाषायी क्षमता के अनुरुप ही कहानी को नहीं कसता बल्कि पूरे पाठक समुदाय की ओर से कहानी का मूल्यांकन करता है।